सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, मई-जून 2020

यीशु के प्रेम की शक्ति

"फिर उसने (यीशु ने) उन सब पर दृष्टि डालकर उस से (जिसका दाहिना हाथ सूखा था) कहा, "अपना हाथ बढ़ा!" और उसने ऐसा ही किया और उसका हाथ पूर्णतः चंगा हो गया। इस पर वे आपे से बाहर होकर आपस में तर्क-वितर्क करके कहने लगे कि हम यीशु के साथ क्या करें?"

इन्हीं दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने गया और उसने सारी रात परमेश्वर से प्रार्थना करने में व्यतीत की। जब दिन निकला तो उसने अपने चेलों को अपने पास बुलाया और उनमें से बारह को चुनकर उन्हें 'प्रेरित' नाम दिया, अर्थात् शमौन जिसका नाम उसने पतरस भी रखा, और उसका भाई अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना, फिलिप्पुस, बरतुलमै, मत्ती, थोमा, हलफई का पुत्र याकूब, और शमौन जो उत्साही भक्त कहलाता है, और याकूब का बेटा यहूदा, और यहूदा इस्करीयोती

.....यीशु के प्रेम.. पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे

कलवरी पर परमेश्वर की करुणा और सच्चाई

धार्मिकता और न्याय तेरे सिंहासन के आधार हैं, करुणा और सच्चाई तेरे आगे चलती है। क्या ही धन्य है वे जो आनन्द की ललकार को पहिचानते हैं। हे यहोवा, वे तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं। वे दिन भर तेरे नाम में आनन्दित रहते हैं, और तेरी धार्मिकता के द्वारा महिमान्वित किए जाते हैं। (भजन संहिता 89:14-16)

परमेश्वर न्यायी है। परमेश्वर का यह एक गुण है जो हम उपेक्षित करके नज़र अन्दाज करते है। वह किसी भी तरह की कर्कशता या बदले या प्रतिशोध से, किसी भी रूप में हमें प्रतिफल नहीं देता है। वह न्यायी है। और न्यायी रहने में वह अनुग्रह से भरा है।

'धार्मिकता और न्याय तेरे सिंहासन के आधार हैं।' परमेश्वर स्पष्ट रूप से अच्छाई और बुराई, धार्मिकता और अधर्म के बीच सीमांकन करता है। और जो उनके बच्चे है वे भी वैसा ही करेंगे। वे दुष्टता से समझौता नहीं करेंगे। उनमें सच्ची न्याय-भावना होगी। वे नहीं चाहेंगे की अन्याय और दबाव बना रहें। आज हम ऐसे कई लोगों को देखते है, जब दुष्टता या अन्याय या लोभ या घूसखोरी या भ्रष्टाचार से उनका सामना होता है तब अनजान बनकर अपनी नज़र फेर लेते है। नहीं, परमेश्वर स्पष्ट रूप से ऐसे लोगों पर दण्ड लाता है जिनका नैतिक मूल्यों के प्रति कोई आदर नहीं है। इसी कारण, हम कोई भी निर्जीव देवता रखने का साहस ना करें। अपने हाथों से किसी भी देवता को बनाकर, उसे रखने का साहस हम ना करें। किसी मूर्ति को बनाकर उसे परमेश्वर कहने का साहस हम ना करे।

परमेश्वर, पवित्र परमेश्वर है। परमेश्वर की पवित्रता मूल विषय है, और ऐसे लोग भी है जो यह भी नहीं जानते की परमेश्वर पवित्र है ऐसे लोगों की गहराई नापी नहीं जा सकती। उनको सही दिशा का आभास नहीं होता। और उसको होगा भी नहीं। उनका दिशासूचक कम्पास गलत है। वे पूरी तरह से गुमराह है क्यों कि उनके मन में परमेश्वर नहीं है। जब यीशु मसीह हमारे हृदय में आते है, हम अपने चारों ओर न्याय देखना चाहेंगे - हमारे कानून के न्यायालयों में, हमारे न्यायाधीशों में, हमारे दफतरों में। हम किसी कमजोर व्यक्ति से अनुचित फायदा उठाना नहीं चाहेंगे। गरीबों को दबाया जाना देखना नहीं चाहेंगे। जब कोई किसी दूसरे को हानि पहुँचा रहा हो, यह देखकर, हम अनदेखी कर मुँह नहीं फेरेंगे।

आज हमारा आमना-सामना ऐसी परिस्थितियों से हो रहा है जहाँ लोग किसी भी विषय में भागीदार बनना नहीं चाह रहे है। मगर दूसरी ओर एक मसीही धार्मिकता से, न्याय से, करुणा से, इन सब विषयों से जुड़ा है। बाइबल यह कहता है

कि करुणा और सच्चाई (परमेश्वर की) उनके आगे चलती हैं। अगर परमेश्वर तुम्हारे साथ है और परमेश्वर तुम्हारा निर्देशन कर रहा है, तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होगा।

करुणा, अहा! कितना आश्चर्यजनक! एक पापी के लिए करुणा। परमेश्वर को दुख देकर, उनके हृदय को तोडने वाले आदमी के लिए करुणा। परमेश्वर के हृदय को तोड़ने का जवाबदार आदमी के प्रति करुणा। कलवरी का कारण - तुम्हारा और मेरा पाप है। सच्चाई कहती है, 'अब इस आदमी में कमी पाई गई है। यह आदमी स्वर्ग के राज्य में कभी भी प्रवेश नहीं कर सकता। यह आदमी उस सच्चाई के - जो मेरा कानून है, उसके विरुद्ध गया है। इसलिए स्वर्ग में इस आदमी के लिए जगह हो ही नहीं सकती।'

तब करुणा कहती है, 'हाँ, क्योंकि इस आदमी ने मान लिया है कि यीशु मसीह के क्रूस में उसके पापों की सजा का कार्य पूरा हुआ है। क्योंकि इस आदमी ने अपनी असलियत के बारे में स्वीकार किया है कि वह पापी है और परमेश्वर की महिमा से वंचित है, वह करुणा का पात्र है।' हमारा परमेश्वर कितना अद्भुत है। एक पापी के प्रति करुणा - मेरे और तुम्हारे लिए करुणा।

इसलिए हम अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित है। मरियम के गीत को याद करो, 'मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है, और मेरी आत्मा मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित हुई है।' (लूका 1:46, 47) आज हमारे आनन्दित होने का क्या कारण है? तुम जानते हो कि सांसारिक उत्तेजनायें तेजी से बीत जाती है। फलस्वरुप दुःख और पीड़ा को छोड़ जाती है। अपराध और लज्जा की भावना छोड़ जाती है। इस संसार की ज्यादातर खुशियाँ क्षणभंगुर और अल्पकालिक है। वे बीत जाती है औऱ एक कडुवे स्वाद को पीछे छोड़ जाती है। मगर एक आदमी जो उद्धारक प्रभु यीशु मसीह में आनन्दित है, उसकी खुशी स्वार्थी है। तुम जानते हो कि यह अनुभव की जा सकती है मगर उसके बारे में व्यख्या नहीं की जा सकती। इसलिए बेहतर है कि तुम यीशु मसीह को पाओ और इस आनन्द को अनुभव करो - ऐसी खुशियाँ जो सर्वदा रहने वाली है, सुख जो परमेश्वर के दाहिना हाथ में है। ऐसा लगता है कि आज का धर्म, किसी भी कीमत पर और किसी को भी बलि चढ़ाकर जहाँ तक हो सके शीघ्रता से सुख प्राप्त कर रहा है। चाहे शवों को लांघना पड़े, जिन्दगियों को तबाह करना पड़े, कौमार्य को कुचलना पड़े, तो भी सुख पाना चाहते है।

अब इस तरह का सुख, यह स्वार्थी सुख सिर्फ दोष और दुःख को ही ला सकता है। बीमारी, दुर्गति और मृत्यु की प्रतिक्रिया को ही ला सकता है। इधर हमें कहा गया है, 'तेरी धार्मिकता के द्वारा महिमान्वित किए जाते हैं।' जो परमेश्वर की धार्मिकता से प्यार करते है, उन्हें एक दाम चुकाना पड़ेगा। उन्हें भी जो धार्मिकता स्थापित कराना चाहें, कीमत चुकाने के लिए तैयार हो। और हमारी धार्मिकता को बनाये रखने के प्रयास में भी, अदा करने के लिए एक मूल्य है। प्रभु यीशु मसीह ने हम से कहा, 'तुम से घृणा करेंगे।' 'मेरे नाम के कारण सब तुम से घृणा करेंगे, परन्तु जो अन्त तक धीरज रखेगा उसी का उद्धार होगा।' (मत्ती 10:22)

अब धार्मिकता के लिए एक मूल्य अदा करना पड़ेगा। लोग शायद तुम से घृणा करें, झूठी निन्दा करके संदेह से तुम्हें देखेंगे। मगर तुम धार्मिकता के द्वारा महिमान्वित किए जाओगे। 'क्यों कि हम यीशु मसीह से भरे है, उन्होंने हमें परमेश्वर के पुत्र बनाकर अलग किया है। तुम्हें धार्मिकता का वस्त्र पहनाया गया है। प्रिय दोस्त, मेरा ये मतलब नहीं है कि यह एक सैद्धान्ति धार्मिकता है। बल्कि मैं एक प्रयोगात्मक धार्मिकता के बारे में जिक्र कर रहा हूँ। जब उस स्त्री ने जो बारह वर्ष से लहू बहने के रोग से पीड़ित थी, प्रभु यीशु को छुआ था, उनसे ताकत बहकर उस औरत में गई। तुम जानते हो कि सामर्थ उनसे निकली और वह स्त्री चंगी हो गयी। उसकी धार्मिकता एक स्वस्थ करने वाली धार्मिकता है। वह दोषी ठहरानेवाली धार्मिकता नहीं है, वह फरीसियों की धार्मिकता जैसी नहीं है, वह आशीष की एक नदी है - एक नदी जो धार्मिकता बहा लाती है।

- जोशुआ दानिय्येल।

.... यीशु के प्रेम.. पृष्ठ 1 से

जो विश्वासघाती निकला।

तब वह उनके साथ नीचे उतरकर समतल स्थान पर खड़ा हुआ और उसके चेलों की एक बड़ी भीड़ के साथ समस्त यहूदिया, यरूशलेम व सूर और सैदा के समुद्र-तट से विशाल जनसमूह वहां उपस्थित था। वे उसका उपदेश सुनने

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books, Lal Building, Goa Street, Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

और रोगों से छुटकारा पाने आऐ थे, और वे जो अशुध्द आत्माओं द्वारा सताए हुए थे अच्छे किए जा रहे थे। समस्त जनसमूह उसे छूने का प्रयत्न कर रहा था, क्योंकि उस में से सामर्थ्य निकलकर उन सब को चंगा कर रही थी।" (लूका 6: 10-19)।

यीशु ने कहा, "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।" यीशु पापियों को बचाने आया था। लोगों ने पश्चाताप किया और अपने पापों को स्वीकार किया। लेकिन एक शिष्य ने अपने दिल को बंद कर लिया। जब तक कि उसके अपने पाप ने उसे मार नहीं दिया, उसने अपने पापों को छुपाया। लेकिन दूसरों ने एक नई दुनिया बनाई। हजारों लोगों ने उनका अनुसरण किया। आनंद, शांति और एक नया प्रेम उस नए समाज में कार्य करता था।

यीशु के पास शक्ति है जो परमाणु शक्ति से बढ़कर है। मनुष्य इस शक्ति का उपयोग विनाश के लिए करता है। यीशु, समाज में शांति और सद्भाव लाने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करते है। पैसा हमें खुश नहीं करता और हमें मंगल-कामना नहीं देता है। पृथ्वी पर स्वर्गीय शक्ति लाने और दुष्टों को बदलने के लिए आप रात भर प्रार्थना कर सकते हैं। जितना अधिक हम परमेश्वर को जानते हैं, हम पाते हैं कि हम अपने भाई से नफरत नहीं कर सकते। जब आप अपने भाई से प्यार करने लगते हैं, तो आप उसका बोझ साझा करना शुरू कर देते हैं। पैसे का प्यार आपको नरक में ले जाता है। यह आप में सभी दिव्य क्षमताओं को छुपाता है।

डॉ. जेकिल नाम का एक आदमी था। वह अपने में जो सभी बुराई है, उसको बाहर लाना चाहता था। उसने एक दवा की खोज की, जिसे पीते ही वह एक बदसूरत मिस्टर हाइड में सिकुड़ जाता। उस रूप में उसने एक व्यक्ति को पीट-पीटकर मार डाला। जब उसने अपने अपराध समाप्त कर लिए, तो वह एक और दवा पीएगा और सम्मानजनक डॉ. जेकेल में बदल जाता। इस प्रकार वह खुद के साथ खेलता था। इस प्रक्रिया को कई बार दोहराया गया। कभी-कभी दवा के बिना भी, वह श्री हाइड में बदल जाता। पुलिस ने उसकी तलाश शुरू की। एक दिन जब एक पार्क में था, डॉ. जेकेल अप्रत्याशित रूप से हाइड में बदल गए। उसने जल्दी से अपने दोस्त की मदद से बदलने वाली दवा मंगाई और डॉ. जेकेल बन गया — लेकिन एक दिन यह दवा समाप्त हो गई और वह हमेशा के लिए मिस्टर हाइड बनकर रह गया। वह एक कमरे में छिप गया। वह फफक कर रो पड़ा। एक दिन पुलिस ने दरवाजा तोड़कर खोला । इसी दौरान उसने कुछ जहर पी लिया और उसकी मौत हो गई। हम अपने बुरे स्वभाव से प्रेरित, चीजें कर रहे हैं।

हमारी दिव्य प्रकृति को वापस लाने के लिए एक दवा है। जो क्रूस को देखने से हमारे पास आती है। हमें "हाइड" का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। यीशु ने शमौन को बुलाया और उसे पतरस में बदल दिया। हममें से कितने लोग पतरस हैं? आपके लिए परमेश्वर का एक बड़ा उद्देश्य है। जीवित जल की नदियाँ आपसे प्रवाहित होनी चाहिए। आप खुद को और अपने पापों को क्यों छिपाते हो? आप पहले से ही नरक में हैं। परमेश्वर चाहते हैं कि हम स्वर्ग में रहें। उध्दार का कार्य पूरा हो गया है और आपके लिए वह उपलब्ध है। क्या आप एक स्वर्गदूत होंगे? अब आप शाऊल हो सकते हैं लेकिन आप एक पौलुस बन सकते हैं। शैतान आपको एक स्वर्गदूत बनने से रोकता है। यीशु की प्रार्थना, हमें बदलने के लिए शक्तिशाली और अद्भुत है।

भारत, एक कठिन जगह है। सेंट थॉमस यहाँ आए और एक आशीर्वाद रहे। अब्राहम एक आशीर्वाद बना था। आपको आशीर्वाद बनना चाहिए।

एन डैनियल।

अनदेखा सबूत

द्वितीय विश्व युद्ध के खूनी दिनों के दौरान, जापानियों ने डच ईस्ट इंडीज (इंडोनेशिया) पर सफलतापूर्वक कब्जा कर लिया, जिससे युद्ध के कई कैदियों को नजरबंद कर दिया गया। इन कैदियों में से एक था सी. रसेल डेबलर थे, जो कि कपाकु जनजाति के एक प्रथम प्रमुख ईसाई मिशनरी थे, और उनकी युवा पत्नी डार्लिन थी। 1944 में रसेल की मृत्यु हो जाती है, लेकिन डार्लिन "अनदेखा सबूत" में अपनी कहानी बताने के लिए जीवित रही – जापानी युद्धबंदी-शिविर में चमत्कारी विश्वास की एक कहानी।

कैंपिली के शिविर में डार्लिन के आगमन के कुछ समय बाद (1943) – जहाँ वह बैरक नं 8 की नेता बन गयी। कष्टों और दुःखों के बीच एक शांत केंद्र - एक वरिष्ठ मिशनरी को दूसरे शिविर में भेज दिया गया। उसने डार्लिन की ओर झुककर कहा, "हे किशोरी, जो भी तुम करो, यीशु मसीह के लिए एक सैनिक बनो।" उन शब्दों ने उसे आगे के अंधेरे दिनों में संभाले रखा- ऐसे दिन जो कठिन परिश्रम, शारीरिक पीड़ा और शिविर के सेनापति यामाजी द्वारा कैदियों पर हमला।

मुसीबत के बीच परमेश्वर ने डार्लिन से बात की। जब एक पुजारी उनके पति के शिविर से आया और वह उसकी ओर बढ़ी, समाचार के लिए उत्सुक, प्रभु ने हमेशा उसकी जाँच की:

वह कहता "अभी नहीं, तुम मुझ पर भरोसा कर सकती हो," जब हवाई हमले की पहली रात और महिलाओं का खुली खाइयों से जाना, बमों के विस्फोट, डार्लिन बार-बार सुन सकती थी: "वह तेरे पास नहीं आएगा।" यह भजन संहिता 91 से था, तेरे निकट हजार, और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे; परन्तु वह तेरे पास न आएगा। "(पद 7)। खुली संकरी खाई में कई लंबी, भयानक रातें बिताने के दौरान, यह एक अनमोल वादा उसके दिल में था।

1943 के अंत में एक दिन, डार्लिन को पता चला कि उनके पति की मौत उनके शिविर में कुछ तीन महीने पहले हुई थी। उसकी आत्मा की पीड़ा में, उसने ऊपर देखा। वहाँ उसका परमेश्वर था, और वह चिल्लाई, " लेकिन परमेश्वर ...! " तुरंत परमेश्वर ने उत्तर दिया: "मेरे बच्ची, क्या मैंने यह नहीं कहा कि जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे साथ रहूंगा, और जब तू नदियों में होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी?"

खबर जल्द ही शिविर के हर कोने में पहुंच गई। उनके पति के शिविर से पुजारी उन्हें यह बताने आया कि जापानियों उसे मौत को गुप्त रखने के लिए बाध्य किया। डार्लिन अब जान गई थी कि जब उसने पुजारी से बात करने की योजना बनाई थी, तब प्रभु ने उसे हर बार क्यों रोका था; उस खबर ने यह उसके लिए बहुत मुश्किल बना दिया होता।

देर उस दोपहर, शिविर के सेनापति ने डार्लिन को अपने कार्यालय में बुलाया। उन्होंने उसे याद दिलाया कि यह युद्ध था। "आप शिविर में अन्य महिलाओं के लिए एक बड़ी मददगार रही हैं। मैं तुमसे कहता हूं, अपनी मुस्कान को मत खोना।"

"श्री. यामाजी, क्या मुझे आपसे बात करने की अनुमति मिल सकती है?" उसने हामी में सिर हिलाया।

"श्री यामाजी, मैं उन लोगों की तरह दुःख नहीं उठाती, जिनमें कोई उम्मीद नहीं है।" उसने उसे यीशु, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पुत्र, स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माता, मोक्ष की योजना के बारे में बताया। जापानी कैंप का सेनापति रोने लगा। "वह आपके लिए मर गया, श्री यामाजी, और वह हमारे दिलों में प्यार रखता है - यहां तक कि उन लोगों के लिए भी जो हमारे दुश्मन हैं। यही कारण है कि मैं आपसे नफरत नहीं करती हूँ। हो सकता है कि परमेश्वर मुझे इस जगह पर इस बार इसलिए ले आए कि मैं आपको यह बता सकूँ कि वह आपसे प्यार करता है।"

सेनापति की आँखों से आँसू गिरने लगे, वह झट से उठ गया और अपने कमरे में जाकर दरवाजा बंद कर दिया। डार्लिन चुपचाप बैठी रही, उसके उद्धार की प्रार्थना करते हुए, कि वह मसीह यीशु में नए जीवन को समझ सके और एक दिन अपनी पत्नी और परिवार के साथ ईश्वर के प्रेम को बाँटने के लिए घर जाए - जापान के किसी अंधेरे, दूरदराज के क्षेत्र में एक ज्योति बने। डार्लिन उस क्षण से जान गयी कि श्री. यामाजी ने उस पर भरोसा किया और समझा गया कि वह डच ईस्ट इंडीज में क्यों थी।

उस रात, डार्लिन को अपने चरवाहे के सांत्वना देने वाले हाथ की जरूरत थी। जिसे कि सुन्दरता की चीज के लिए चकनाचूर कर दिया गया है, कौन तोड़ सकता है, फिर बहाल कर सकता है?

अचानक प्रभु वहाँ था, उसके दिल के गिरिजाघर में खड़ा था, और उसकी याददास्त की सूची पर लिखा उसका वचन उसने पढ़ना शुरू किया, "मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूं; कि सब विलाप करने वालों को शान्ति दूं और सिय्योन के विलाप करने वालों के सिर पर की राख दूर कर के सुन्दर पगड़ी बान्ध दूं, कि उनका विलाप दूर कर के हर्ष का तेल लगाऊं और उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना ओढ़ाऊं;" (यशायाह 61: 1-3)।

हमेशा की तरह, उसने "इसे प्रभु के सामने फैलाया।" उसने प्रभु को बीते, वर्तमान समय, उसकी भावना या भावहीनता, भविष्य कैसा दिखा, और अकेलेपन की अत्याचारी भावना के बारे में बताया। वह यह सुनने के लिए इंतजार कर रही थी कि उसका प्रभु क्या कहेगा और चुप्पी ने उसे जवाब दिया-उसके दोस्तों की वह चुप्पी जिन्होंने उसका दुःख बाँटा।

डार्लिन ने प्रार्थना की। अनुभवपूर्वक से वह पवित्र आत्मा की शांति के आराम को समझना सीख रही थी। दुःख की तलवार भीतर तक चुभ गई थी, लेकिन उसने तलवार को तेल से नहला दिया।

एक दिन, केमपेईताई-जापानी सेना की भयंकर सैन्य पुलिस - डार्लिन को शिविर से मैकासार की जेल में ले जाने के लिए आई। जब कार आई, तो उन्होंने पाया कि एक मिशनरी सलाखों पर लटकी थी और उसके खून से सलाखें लथपथ थे। महिला ने डार्लिन को देखा लेकिन केवल उसने अपना सिर आगे-पीछे हिलाया। "परमेश्वर, आपने रसल को ले लिया, " डार्लिन का दिल पीड़ा से

सत्य की परख!

"और यदि मेरे लोग जो मेरे नाम के कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपने बुरे मार्गों से फिरें, तब मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को चंगा कर दूंगा।" (2 इतिहास 7:14)

"किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हम उध्दार पाऐं।" (प्रेरितों के काम 4:12)

पृष्ठ 4

पुकार उठा, "प्रभु ,क्या अब मुझे इससे गुजरना होगा? "

प्रभु ने कहा, "मेरी बच्ची, मैं जिससे प्यार करता हूँ, उसे ताड़ना भी देता हूँ।

डार्लिन ने उनके प्यार की गुणवत्ता को जान लिया था, और इसलिए उनका दिल समर्पण में झुक गया। वह फुसफुसायी, "सब ठीक है, परमेश्वर, सब ठीक है - बस मुझे मत छोड़ो।"

भयानक शारीरिक पीड़ा और पूछताछ (आरोप लगायी जासूसी गतिविधियों से संबंधित) के बाद, परमेश्वर ने उसे नहीं छोड़ा लेकिन उसे मसीह का "अच्छा सैनिक" होने की ताकत दी। उसने उसकी कई प्रार्थनाओं का जवाब दिया क्योंकि उसने उस पर भरोसा किया था।

एक दोपहर को, डार्लिन ने अपनी कोठरी के एक कगार पर एक चाकू पाया। यह कहां से आया? इसे वहां किसने डाला? कब? क्यों? उसे इससे क्या करना चाहिए? क्या यह आत्महत्या करने के लिए रखा गया है, या उसके खिलाफ सबूत के रूप में इस्तेमाल करने के लिए? डार्लिन के पेट में अंदर मंथन हुआ। अपने घुटनों के बल, फर्श पर अपना चेहरा रखकर, उसने प्रभु को पूरी स्थिति बताई। उसकी आत्मा पर शांति छा गयी और उसने अब्राहम, इसहाक, और याकूब, एलिय्याह और दानिय्यल के परमेश्वर, चमत्कारों के परमेश्वर की आराधना करनी शुरू कर दी। "परमेश्वर, अगर आप मिस्र के अत्याचार से अपने लोगों को छुड़ाने के लिए लाल सागर खोल सके, और यदि आप अपने दूत को शेरों के मुंह बंद करने के लिए भेज सके ताकि वे दानिय्यल को न मार सके - तो, परमेश्वर, यह चाकू हटाना आपके लिए कुछ भी नहीं है। धन्यवाद पिताजी।"

तीन दिनों के लिए, डार्लिन ने अपने छह फुट-वर्ग कोठरी को नहीं छोड़ा। फिर भी तीसरे दिन की दोपहर में, वह एक खाली कगार खोजने के लिए रेंगती आई। वहाँ चाकू न था! "और, पिता, जिसने उसके दिमाग से चाकू की सब यादों को मिटा दिया" उसने बस यही किया। उसके लिए, अब भी सभी चीजें संभव थीं।

वह, जो कि महान डॉक्टर है, जब डार्लिन पेचिश से परेशान थी, तब भी उससे गुजरकर गया। विश्वास से डार्लिन उसके वस्त्र के आँचल को छूने पहुँची, और उसने उसे पेचिश, बेरीबेरी, और मलेरिया से स्वस्थ कर दिया। वह उस रक्षक को गवाही दे सकी जो उसके लिए दवाइयाँ लेकर आया था कि परमेश्वर ने उसे स्वस्थ कर दिया।

परमेश्वर ने उसे भी दिया। एक बार जब डार्लिन ने अपने दरवाजे के ऊपर सरदल की सलाख पर लटककर बाहर देख रही थी। तो उसने देखा कि एक महिला शिविर में अंगूर की बेल से ढके बाड़े के बीच से केले ले रही है। फर्श पर उतककर, थकी हुई, डार्लिन ने परमेश्वर से एक केला मांगा। तब उसने यह सोचना शुरू किया — कि ईश्वर यह कैसे कर सकता है? वह यह नहीं देख सकी कि चाकू की घटना और उसकी स्वस्थता के बाद भी परमेश्वर उन जेल की दीवारों के बीच से उसके लिए एक केला कैसे ला सकते हैं। उसने प्रार्थना की, "आपके पास ऐसा करने के लिए कोई रास्ता नहीं है।"

अगले दिन, डार्लिन को श्री. यामाजी अचानक मिलने आये, जो कैंपिली के बहुत ही क्रूर शिविर कप्तान थे जिन्हें उसने यीशु और उनके प्यार के बारे में गवाही दी थी और जिनके लिए उसने प्रार्थना की थी। आखिरकार उसके उसकी कोठरी से चले जाने के बाद, रक्षक वापस लौटा, दरवाजा खोला, अंदर आया और एक व्यापक इशारा करके केले उसके पैरों पर रख दिये! उसने कहा,"ये आपके हैं," "और ये ,सब केले श्री यामाजी ने दिये हैं।" डार्लिन नीचे बैठ गयी, निस्तब्ध होकर, और केले गिने। यहाँ बयानवे केले थे।

डार्लिन ने अपने प्रभु के सामने ऐसी शर्म कभी नहीं जानी थी। उसने केले को एक कोने में धकेल दिया और प्रभु के सामने रोने लगी। "प्रभु मुझे माफ़ कीजिये; मैं बहुत शर्मिंदा हूँ। मुझे आप पर पूरा भरोसा नहीं हुआ कि आप मेरे लिए एक केला ला सकते हैं। बस इन केलों को देखो - लगभग सौ हैं।"

धीरे से, उसने उसके दिल के भीतर फिर जवाब दिया: "मुझे ऐसा करने से ही खुशी होती है, जो कुछ भी आप माँगते हैं या सोचते हैं, उससे कई अधिक।" डार्लिन उन क्षणों में जान गयी कि परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं था।

एक अन्य अवसर पर, भयानक अकेलेपन के एक क्षण और युद्ध से तबाह हुए लोगों की दुनिया के लिए, उसने किसी व्यक्ति को इंडोनेशियन भाषा में गाते हुए सुना: "तेरा नाम अनमोल है, एक आश्रय जो सुरक्षित है!" डार्लिन का दिल उज्ज्वल आशा के साथ भर गया। यीशु का नाम उसके लिए निराशा के दुश्मन के खिलाफ रक्षा का मजबूत दुर्ग था; "मान लो" के निराशा भरे खेल में पड़कर उसने प्रभु को माफी माँगने के लिए पुकारा," - मान लो कि वह अगर इसे घर न बनाती ?

हालाँकि, परमेश्वर ने उसे दूसरों की ओर से संभावित द्वेष से बचाया था, एक ऐसी स्थिति आयी जब उसने एक आत्मिक खालीपन को महसूस किया। वह किसी कबूल न किये पाप को नहीं जानती थी। उसने प्रार्थना की "परमेश्वर, मुझे विश्वास है कि जो कि बाइबल कहती है," । "मैं विश्वास से चलती हूँ, दृष्टि से नहीं। मुझे आपको मेरे पास महसूस करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आपका वचन कहता है कि आप मुझे कभी नहीं छोड़ेंगे और न ही मुझे त्यागेंगे। परमेश्वर, मैं अपने विश्वास की पुष्टि करती हूँ, मुझे विश्वास है।" इब्रानियों 11: 1 के वचन ने उसके मन को भर दिया: "अब विश्वास, आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है"। अनदेखी वस्तु का प्रमाण – यही वह वस्तु थी जिस पर उसने विश्वास किया - परमानंद की भावनाओं या क्षणों में नहीं, लेकिन न बदलने वाले व्यक्ति यीशु मसीह में। वह अपने गौरवशाली प्रभु पर भरोसा रख सकती थी।

2 कुरिन्थियों 1:10 से प्रभु डार्लिन के दिल से बात कहने लगे: "उसी ने हमें ऐसी बड़ी मृत्यु से बचाया, और बचाएगा; और उस से हमारी यह आशा है,

कि वह आगे को भी बचाता रहेगा।"

हाँ, वह पाप और मृत्यु के कानून से मुक्त हो गई थी, वह मसीह में जीवित थी, वह विश्वास करती थी। फिर भी ये शब्द फिर से गूंज उठे: "जिसने बचाया ... और जो बचाएगा, और आगे को भी बचाता रहेगा ... अंत में उसने पूछा, "परमेश्वर, आप मुझे यहाँ से कैसे निकाल सकते हैं?" शायद प्रभु उसे समझाने की कोशिश कर रहे थे कि पहले उन्हें उसे कैमपैटाई के जेल से बाहर निकालना है। बाद में उसी दिन,जब उसने आखिर अब काला, सूखा केला धन्यवाद के साथ छील लिया, और मौत की संभावना का सामना किया। डार्लिन को कंपिली में वापस भेज दिया गया।

जुलाई 1945 में, इस शिविर पर मित्र देशों ने बमों से हमला किया। डार्लिन एक भट्ठा खाई में कूद गई, लेकिन तब प्रभु ने उसे याद दिलाया कि उसने दूसरी की महिला बाइबल उधार ली है। , "डार्लिन ने प्रार्थना की, "आप सही कह रहे हैं, परमेश्वर, मुझे उसकी बाइबल को जलाने का कोई अधिकार नहीं है।" डार्लिन खाई से बाहर कूद कर निकली, जलती हुई बैरक में भाग गई, बाइबल को लेकर बाहर भाग आई।

बाद में जब डार्लिन बैरक में लौटी, तो वह अपने बिस्तर रखने की जगह के पास रुक गई, जहाँ उसका बिस्तर जलकर ज़मीन गिरा था। राख के ढेरे के ऊपर उसके दूल्हे की किताब पड़ी थी। पिता के कहने पर, आग की लौ से चटाई जल गयी और बीच की तह के पृष्ठों को जलाकर, जहां उसकी शादी का प्रमाण पत्र सोने की स्याही में लिखा गया था। यह इतना सुंदर था कि जैसे सोना, आग में शुद्ध किया हुआ, सूरज की किरणों में चमक रहा हो। फिर भी जब उसने किताब को छुआ, तो वह बिखर गई। पीड़ा में, डार्लिन रोयी: "परमेश्वर, केवल यही एक चीज मेरे पास थी! क्या यह मेरे पास नहीं रह सकता था? बस केवल वही एक चीज?" उसने चिल्लाने से बचने के लिए अपना मुँह ढँक लिया। "पिता! हे पिता! "

परमेश्वर का जवाब धीरे से आया: "मेरी बच्ची, यही है जो मैं तुम्हारे साथ करना चाहता हूं - तुम्हें उस शुद्ध सोने की तरह बनाना चाहता हूँ - भले ही मुझे तुम्हें सात बार आग से लेकर जाना पड़े।"

डार्लिन अपने हृदय की गहराइयों तक हिल गई। "हे पिता, सात बार? मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ भी नहीं बचा है ... लेकिन केवल अब मैं हूँ। उसे महसूस किया कि प्रभु की प्यार भरी बाहें उसे ऊपर उठा रही हैं।"

थोड़ी देर बाद, डार्लिन ने एक महिला को रोते हुए पाया। वह सिसकिया भर कर रोयी, "मेरा गद्दा जल गया"।

डार्लिन ने कहा, "अरे, हाँ, सब कुछ जल गया है, लेकिन हम अभी भी जीवित हैं। हमारे पास परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए बहुत कुछ है!"

"लेकिन मैंने इसे बैरक में नहीं छोड़ा। मैंने इसे खाई में फेंक दिया जहां आप हमेशा पड़ी रहती हैं।"

वह खाई, जहां डार्लिन हमेशा घुटने मोड़कर बैठती थी, धूंए का आवरण और उसके गद्दे की राख थी! डार्लिन भयभीत हो गई। ""प्रभु, क्या यह श्रीमती ली की बाइबल नहीं थी जिसके बारे में आप चिंतित थे, क्या यह था? तुम्हें पता था कि मेरी जान बचाने के लिए ...मुझे खाई से बाहर निकालने का एक तरीका था! पिता, मेरे लिए जो कुछ बचा है, वह तुम्हारा है। यह सब आप का है!"

बाद में 1945 में डार्लिन की मुक्ति के बाद, वह अमेरिका लौटने में सफल हुई। अपने दूसरे पति जेरी रोज़ के साथ, वह न्यू गिनिया लौटी और दूसरों को मसीह के प्यार को बताना जारी रखा।

- डार्लिन डेब्लर रोज़, अनदेखा सबूत

परमेश्वर का काम करना

थॉमस विन्सेंट का जन्म इंग्लैंड में 1634 में हुआ था। वह लंदन में ईसाई सेवक बने थे। उनके जैसे कई प्यूरिटन सेवक हैं - जिन्होंने सुसमाचार और एक अच्छे विवेक को महत्व दिया है। 1662 में पारित एक कानून के कारण, इंग्लैंड के संस्थागत चर्च से उन सब को "बेदखल" होना पड़ा।

1665 में, महान प्लेग ने लंदन को दहला दिया। यह इन "बेदखल" पादरियों में से कई के लिए एक अवसर बन गया है कि वे अपने जीवन में, बहुत पवित्रता और जोश दिखाये। और परमेश्वर के लिए भी यह दिखाने का एक अवसर था कि उस प्लेग से बचाते, उन सबके जीवन का दैवीकृत संरक्षण, क्योंकि वे उस महामारी के बीच में लोगों की सेवा का काम कर रहे थे।

विन्सेंट, ऐलिंगटन में एक अकादमी के ट्यूटर बन गए थे। लेकिन जब महामारी टूट पड़ी तो उन्होंने शहर में ही रहने का निर्णय किया। बीमार लोगों का दौरा करने और आकुल लोगों को उपदेश देने का उन्होंने संकल्प किया। उन्होंने अपने ईसाई भाइयों को बताया कि उसने अपनी आत्मा की स्थिति का ध्यानपूर्वक परीक्षण किया है। और अब वह आराम से मृत्यु को देख सकता है। उन्होंने यह पूरी तरह से आवश्यक समझा कि तब मर रहे कई लोगों को कुछ आध्यात्मिक सहायता मिलनी चाहिए। और फिर एक प्रचारक होने की उपयोगिता का ऐसा अवसर उन्हें अब जैसा कभी भी नहीं मिलेगा। और यह भी कि उसने खुद को पूरी तरह से परमेश्वर के प्रतिबध्य, सौंप दिया है।

दूसरे मसीही सेवकों का समर्थन पाकर, जिन्होंने अपनी सुरक्षा और सफलता के लिए प्रार्थना की हैं। धीरज के साथ, वह

लगन के साथ काम करने लगे। प्लेग के दौरान, उन्होंने कुछ पारिश चर्चों में भी प्रचार किया था।

महामारी के उस माहौल में, फैसले का वह न्याय निर्णायक और भयावह दिन का प्रस्ताव, लोगों की आँखों के सामने उनके संदेशों को बहुत बल दिया। और लोग जानना चाहते थे कि वह अगले रविवार को कहाँ प्रचार करेंगे। कई लोगों ने उद्धार की आवश्यकता और मसीह के लहू के माध्यम से स्वर्ग का रास्ता सीखा। बिना किसी डर के, उसको बुला भेजे सभी लोगों के पास वह जाता था। और परमेश्वर को यह भाया कि वह उसके जीवन का विशेष ध्यान रखे। उस साल लंदन में प्लेग के कारण 68,596 लोगों की मृत्यु हो गई। हालाँकि मृतकों में, वह जिस परिवार के साथ रहता था, उसमें सात व्यक्ति भी शामिल थे। मगर हर समय वह पूर्णतः स्वास्थ्य, काम में लगे रहता था। इस प्रकार भजन संहिता 91 की प्रतिज्ञायें, परमेश्वर के इस सेवक को दिए गए थे।

'गॉड्स टेरिबिल वॉयस इन द सिटी' (1667) नाम के एक ट्रैक्ट में, उन्होंने लिखा: "वह महीमारी आम तौर पर कुछ दिनों के भीतर, या कभी-कभी कुछ घंटों के भीतर मार देता है। ...

जून: अब लंदन के नागरिकों को उनके व्यापार के कार्यें में रोक लगाना पड़ा; उन्हें डर लगने लगता कि वे किसके साथ बात करते हैं और किसके साथ सौदा करते है, कही ऐसा न हो कि वे संक्रमित स्थानों से बाहर आ जाएं। ...

अब कई घर बंद हो गए हैं जहां प्लेग आता है, और निवासियों को घरों के अन्दर बंद कर देते हैं, ऐसा न हो कि कोई अन्दर आकर, संक्रमित वे बीमारी ना फैलाए। ऐसे घरों के सामने लगी लाल 'X' के निशानों को देखना बहुत ही ड़रावना और निराशाजनक था। और बड़े-बड़े लाल अक्षरों में दरवाजे पर लगी निशान, 'यहोवा, हम पर कृपा कर।' बरछी-भाला के साथ दरवाजों के सामने खड़े चौकीदार; और उन स्थानों में, इस तरह के एकांत का माहौल। बहुत एहतियाती से उनके पास से गुजरने वाले लोग और वे इतने भयभीत रहते थे, मानो वे दुश्मनों के सामने पंक्तिबद्ध है जो उन्हें नष्ट करने के लिए इंतजार कर रहे है।"

उन्होंने बाद के महीनों में मची विनाश के बारे में भी लिखा। साथ-साथ प्लेग और आग (1666) से शहर को पीड़ित करने की अनुमति देते, परमेश्वर की योजना। उन्होंने लंदन के इतिहास में महामारी और आग के दो भयानक न्याय-निर्णयों में परमेश्वर की "आवाज़" पर ध्यान दिया। इन निर्णयों के कारण और निर्वहन की खोज में अपनी "व्याख्या ..." प्रदान की। - "परमेश्वर उम्मीद करते हैं," उन्होंने कहा, "लंदन के लोगों को, अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए।"

विंसेंट, यीशु मसीह का एक प्रेमी था। 'द टू क्रिस्टियन्स लव टु द अनसीन क्राइस्ट' में लिखते हुए: "यदि वे (ईसाई) उससे (मसीह से) प्यार करते हैं तो वे खुद को नकारने के बारे में ज्यादा नहीं सोचेंगे। अपना क्रूस उठा लेंगे, और प्रभु जहां भी उनकी अगुवाई करें, उनके पीछे चलेंगे।"

वह प्लेग के बाद बारह साल से भी अधिक समय तक होक्सटन में, एक मण्डली के लिए वे एक उपयोगी पादरी रहे, और 1678 में चवालीस की उम्र में उसकी मृत्यु हो गई।

—सैमुअल डन कृत, 'मेमोआर्स ऑफ सेवेन्टी एमिनेन्ट ड़िवैन्स'

जॉन स्नो, 1844 (गूगल बुक्स) और

एनेक्टोड्स (मूल रूप से 1841 में लंदन की रिलिजियस ट्रैक्ट सोसाइटी द्वारा प्रकाशित)।